Photo from Lt. (Dr)Meenakshi Lohani

From: meenakshi lohani (meenakshilohani@yahoo.co.in)

To: meenakshilohani@yahoo.co.in

Date: Sunday, 29 September, 2019, 09:21 pm IST

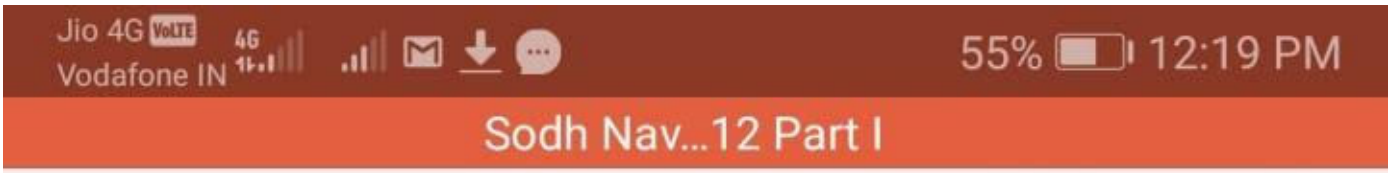

Shodh Navneet (International Refereed Research Journal)
ISSN : 2321-6581, Impact Factor : 3.082, Vol. XII, Jan. - June - 2019

आरण्यक ग्रन्थों में पर्यावरण चिन्तन

डॉ. दीप्ति वाजपेयी*

शोध सारांश : *भारत प्राचीन काल से कृषि प्रधान देश रहा है। कृषि के माध्यम से जीवकोपार्जन करने के कारण वैदिक साहित्य में वृक्षों तथा अन्य प्राकृतिक संसाधनों यथा – वायु, जल, सूर्य, अग्नि, पृथ्वी इत्यादि को देवताओं की भाँति पूजकर संरक्षित करने का श्लाघनीय संदेश दिया गया है। प्राचीन समय में भारत में पर्यावरण संतुलन अपने चरम पर था। भारतीय संस्कृति अरण्य प्रधान संस्कृति थी तथा पर्यावरण को संरक्षित करने की शिक्षा भारतीय संस्कृति में धार्मिक एवं नैतिक मूल्यों से जोड़कर दी जाती थी। इसलिए हमारी संस्कृति में विभिन्न त्योहार हो या दैनिक व नैत्यिक क्रिया-कलाप के निर्देश सभी प्रकृति के संरक्षण की भावना से ओत-प्रोत हैं। आरण्यक ग्रन्थों में पर्यावरण मानवीय जीवन पद्धति से मिला हुआ है। यही भावना पर्यावरण संतुलन को दृढता प्रदान करती है।*

मुख्य शब्द - भारतीय संस्कृति,पर्यावरण सन्तुलन, आरण्यक आदि।

भारतीय संस्कृति प्रकृति अनुरागी है। प्राचीन भारत में प्रकृति और मानव एक दूसरे के साथ तादात्मीकरण के भाव से रहते थे। मानव प्रकृति को आत्मवत् मानकर उसके साथ सहभाव स्थापित करता था। वह उसे दोहन की वस्तु न मानकर दिव्य भाव से उसके प्रति श्रद्धानवत् रहता था। जीवनकोपार्जन हेतु प्रकृति से प्राप्त समस्त संसाधनों के लिए कृतज्ञता के भाव धारण कर प्रकृति के संवर्धन हेतु विविध प्रयास करता था। मानवता की रक्षा लिए प्रकृति की सुरक्षा अत्यधिक आवश्यक है। अत: विज्ञान व प्रकृति में सामञ्जस्य स्थापित कर जीवन जीने की पद्धति को विकसित करना चाहिए, जिससे मनुष्य प्रकृति के सानिध्य में रहकर अपने जीवन को उन्नत और समृद्ध बना सके। वैदिक साहित्य में पर्यावरण सम्बन्धी नैतिक अनुशासन की शिक्षा विविध रूपों में दी गई हैं साथ ही मानव व प्रकृति के प्रति मानवीय व्यवहार के नियमों को भी निर्धारित किया गया है। आरण्यक ग्रन्थों में पर्यावरण मानवीय जीवन पद्धति से मिला हुआ है। इसमें जीवन का कोई भी पक्ष पर्यावरण से पृथक करके नहीं देखा गया है। मानवों की नित्य क्रिया, संस्कार, व्रत-अनुष्ठान, त्योहार, क्रियाकर्म, पूजा-पद्धति, नृत्य-गीत सभी में पर्यावरण संरक्षण की भावना निहित है। यही भावना पर्यावरण संतुलन को दृढता प्रदान करती है।

भारतीय मनीषा सृष्टि के प्रारम्भ से ही प्राणिमात्र के कल्याणार्थ सतत् जागरूक एवं चिन्तनशील रही है। यही हमारी भारतीय संस्कृति का मूल उद्घोष भी है –

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्।।

वैदिक संस्कृति प्रकृति की कमनीय गोद में विकसित एवं पल्लवित हुई है। प्रकृति का सहचर बनकर

* एसो. प्रोफेसर-संस्कृत विभाग, कु. मायावती राजकीय महिला स्ना. महाविद्यालय बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर

तत्कालीन मानव ने पर्यावरण को संरक्षित किया है। वेद कालीन समाज में न केवल पर्यावरण के प्रति सजगता थी वरन् उसकी रक्षा के प्रति तत्परता एवं उसके महत्त्व की दृढ़ मान्यता थी, इसीलिए पर्यावरण की रक्षा करना पूजा का अविभाज्य अंग था। वैदिक साहित्य पर्यावरण का विभाजन वायु, जल, मिट्टी, वनस्पति एवं पशु-पक्षी संरक्षण के रूप में हुआ है।

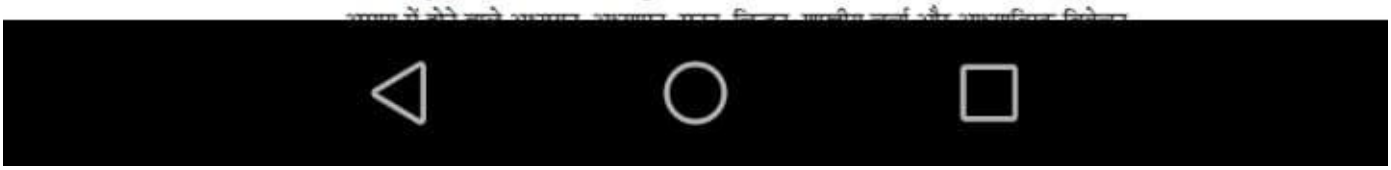

Sent from Yahoo Mail on Android